IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 7, June 2026
Impact Factor: 8.2

मराठी से हिंदी अनुवाद की समस्याए आंतरभाषिक अनुवाद के संदर्भ में

प्रा.डॉ.मोहन मंगेशराव सावंत
मा.श्री.अण्णासाहेब डांगे कला,वाणिज्य व विज्ञान महाविदयालय हातकणंगले जि.कोल्हापूर

शोध सारांश : *भारतीय समाज एक बहुभाषिक समाज है । बहुभाषिक भारतीय समाज के सामाजिक एवं सांस्कृतिक स्वरूप की जब भी हम बात करते है तो हमारे मन मस्तिष्क में एक ऐसे विशाल उदयान की तस्वीर उभरकर सामने आती है जो बहुविध बहुरूपी विविध रंगी पुष्पों से पल्लवित है। भारत की इस विविधता में एकता को सुदृढ करने में भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। भारत की प्रादेशिक भाषाए न केवल प्रांत विशेष के आचार-विचार, रहन-सहन को अपने साहित्य में व्याख्यायित करती है अपितु सहोदरियों की भाँति एक दूसरे से समन्वय स्थपित करते हुए आदान-प्रदान की प्रक्रिया के माध्यम से स्वयं को तथा एक दूसरे को समृदध करने में भी सक्षम है। बहुभाषी भारतीय समाज में एक व्यक्ति के लिए एक से अधिक भाषाए बोलना स्वाभाविक है । यही कारण है कि भारतीय समाज ने व्दिभाषिकता या त्रिभाषिकता अथता बहुभाषिकता का स्वाभाविक रूप से स्वीकार कर लिया है। यहां यह कहना अनुचित न होगा कि निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल स्वभाषा का शंखनाद करनेवाले भारतेंदु हरिष्चंद्र की इन पंक्तियों को ध्यान में रखकर ही भारतीय संविधान के निर्माता डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरजी ने संघराज्य के संस्कार, सभ्यता ,संस्कृति एवं नैतिकता व भारतीय दर्शन को समझने के लिए ही संविधान के अष्टम सूची में भारतीय भाषाओं को यथायोग्य स्थान देकर उन्हें भारत की राष्ट्रभाषा का दर्जा प्रदान किया है। आज भारत के भिन्न-भिन्न भाषा भाषी समुदायों के बीच परस्पर संपर्क और संप्रेषणीयता के अधिकाधिक अवसर उन्नत हुए है इन बहुभाषिक समाज से संबंधित विभिन्न वर्गो में सामंजस्य स्थापित करने का एक आधार अनुवाद है।*

बीज शब्द – अनुवाद , मराठी,हिंदी, लिंग भेद, कारक भेद, क्रिया भेद, अर्थ भेद

1. प्रस्तावना :

अनुवाद सामान्य तौर पर एक भाषा से दूसरी भाषा में किया गया कार्य याने एक स्त्रोत भाषा से दूसरी लक्ष्य भाषा में किया गया कार्य अनुवाद कहलाता है। परंतु जितना यह कहने के लिए आसान लगता है उतना ही यह कठिन कार्य है। एक भाषा के कथ्य को दूसरी भाषा में ले जाना यानि उस स्त्रोत भाषा के सभी भाषिक पक्ष को ले जाना होता है। भाषिक पक्ष में भाषा की संरचना से लेकर उसके सामाजिक, सांस्कृतिक ,और परिवेशगत विषेषताओं को भी ले जाना होता है। अनुवाद के लिए महत मूलभाषा और लक्ष्य भाषा की अच्छी जानकारी ही पर्याप्त नही होती क्योंकि प्रत्येक भाषा की शैलीगत भिन्नता के कारण स्त्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा के बीच एक खाई सी उत्पन्न हो जाती है। इस संदर्भ में मराठी के प्रसिदध नाटककार मामा वरेरकर जी ने कहा कि - लेखक होना आसान है किंतु अनुवादक होना अत्यंत कठिन है। 1 क्योंकि प्रत्येक भाषा की अपनी विशिष्ठताए होती है । अनुवादक को दो भाषाओं का गहरा अध्ययन , अनुवाद विषय तथा अनुवाद प्रकिया , शैलिया आदि का अद्ययावत ज्ञान आदि गुणों से संपन्न व्यक्तित्व का धनी अनुवादक ही इन विषिष्टताओं को आत्मसात कर अनुवाद कार्य को सफल बना सकता है ।

अनुसंधान सामग्री – कोश ,संदर्भ ग्रंथ,पत्रिका,समाचार पत्र

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in
DOI: 10.48175/IJARSCT-37509

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 7, June 2026 Impact Factor: 8.2

विमर्श - अनुवाद शब्द की उत्पति वद धातु में अनु उपसर्ग जोडकर हुई है वद का अर्थ है कथन ओर अनु का अर्थ है पीछे पुन समान अथवा अनुरूप इसतरह अनुवाद शब्द का शाब्दिक अर्थ है - पुनकथन या किसी के कहने के बाद कहना अर्थात एक भाषा में किसी के व्दारा कही गई बात को किसी दूसरी भाषा में पुनकथन । अनुवाद शब्द के पर्यायावाची शब्द के रूप में अनुवचन,दुहराना, आवृति ,ज्ञान को कहना ,भाषान्तर,उत्थ,तर्जुमा आदि शब्द प्रयुक्त होते है अनुवाद के लिए अंग्रेजी में Translation शब्द का प्रयोग किया जाता हैं । इस शब्द की व्युत्पति लैटिन शब्द और शब्दों के योग से हुई है । शब्द का अर्थ है - पार और का अर्थ है ले जाने की क्रिया। अत: शब्द का अर्थ हुआ एक भाषा से दूसरी भाषा तक जाना ।

अनुवाद की परिभाषा - कई विदवानों ने अनुवाद को परिभाषित करने का प्रयत्न किया है । हम कुछ विदवानों की परिभाषाओं को उदाहरण के रूप में लेकर अनुवाद को परिभाषित करने कोशिश करेंगे । डॉ.भोलानाथ तिवारी के मतानुसार - अनुवाद का मूल उदेश्य हे स्त्रोत भाषा की रचना के भाव या विचार लक्ष्य भाषा में यथासंभव अपने रूप में लाना है । 2

डॉ.जी.गोपीनाथन - अनुवाद यह समग्र प्रक्रिया है अर्थ एवं शैली ली की समतुल्यता के तलाश की। 3

क्रोचे - अनुवाद मुल अभिव्यंजना का पुन सृजन नही बल्कि मूल से न्यूनाधिक रूप से मिलती जुलती समान अभिव्यंजना का सृजन होगा । 4

डॉ.अर्जुन चव्हाण - एक स्त्रोत भाषा की सामग्री का दूसरी लक्ष्य भाषा में यथावत सम्प्रेषण अनुवाद है जिसमें भाव, अर्थ, विचार, कथ्य, सामाजिक, सांस्कृतिक संदर्भ और शैली आदि की सहजता निकटता तथा समतुल्यता रक्षित हो और जो मूल के गुण दोषों को समान सम्प्रेषित करें । 5

अनुवाद जैसे विषय की चर्चा करने से पहले अनुवाद सिदधांत के बारे में समझना जरूरी है । अनुवाद की प्रक्रिया में अनुवाद सिध्दांत की भूमिका महत्वपूर्ण होती हैं । इसके बारे में अपने विचार व्यक्त करते हुए भोलानाथ तिवारीजी लिखते है - भाषा ध्वन्यात्मक प्रतीकों की व्यवस्था है और अनुवाद इन्ही प्रतीकों का प्रतिस्थापन अर्थात एक भाषा कि प्रतीकों के स्थान पर दूसरी भाषा के निकटतम कथनतः और कथ्यतः समतुल्य और सहज प्रतीकों का प्रयोग है। भारत की बहुभाषिक स्थिति ने ही अनुवाद जैसे विषय को बहुमुखी व बहुआयामी बनाया है।
भारत में मुख्यत आस्टिक, द्रविड, चीनी-तिब्बती तथा भारोपीय परिवारों की भाषा का प्रयोग होता है । भारोपीय परिवार की मुख्या भाषाओं में ग्रीक , लैटिन ,अवेस्ना संस्कृत पालि, प्राकृत आदि प्राचीन भाषाओं के साथ आधुनिक भाषाओ में अंग्रेजी, जर्मन, फारसी, बंगला, गुजराती, मराठी, हिंदी आदि का समावेश किया गया है । आत्मीयता के जैसे भाव परिवार के आपसी सदस्यों में होते है ठीक वैसे ही आत्मीयता के भाव बहुभाषी देष में उत्पन्न करने का महती कार्य आज अनुवाद कर रहा है । इसप्रकार अनुवाद ने हिंदी भाषा को समृदध कर राष्ट्रीय एकता को संबल ही प्रदान किया है । बहुभाषिक भरती समाज के प्रादेशिक संस्कार , सभ्यता एवं संस्कृति आदि का हिंदी में सफल अनुवाद करते समय भाषाओं के व्दारा विचारों के आदान- प्रदान भाषाओं की प्रकृति, व्याकरण, ऑचलिक शब्द संपति भाषिक विविधताएं आदि कई समस्याओं का सामना अनुवादक को करना पडता है । वैसे तो मराठी और हिंदी दानों ही भगिनी भषाए है ।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 7, June 2026 Impact Factor: 8.2

फिर भी उपरी तौर पर सामने दिखाई देनेवाली दोनों ही भाषाओं अर्थात मराठी और हिंदी के बीच कुछ भाषिक तत्व ऐसे है जो अनुवाद में यथायोग्य व्यक्त करना भी बिकट समस्या होती है । जिसका अध्ययन करने का प्रयास प्रस्तुत आलेख में किया गया है।

1. मराठी से हिंदी अनुवाद में लिंग भेद - हर भाषा की बनावट अलग होती है लिंग भेद के संबंध में अपने अपने अलग नियम होते है जिसके पिछे कोई लोक रूढी काम करती है। मराठी भाषा का उदभव संस्कृत से होने के कारण संस्कृत के समान ही मराठी भाषा में भी तीन लिंग है पहला पुल्लींग दुसरा स्त्रिलिंग और तिसरा नपुसकलिंग मराठी भाषा में लिंग निर्धारित करना थोडा कठिन कार्य है क्योंकि मराठी में लिंग व्यवस्था यादृच्छीक होने के कारण नियमों को प्रमाणित करने का कोई ठोस प्रमाण नही है इस मत की पुष्टी हेतू मराठी व्याकरणाचार्य श्री.ग.ह.केळेकर के विचारों को देखना समिचिन होगा - मराठी में लिंग व्यवस्था कृत्रिम और अनियमित है यह इतनी कृत्रिम है की इसका विवेचन करना कठिन है । मराठी संज्ञाओं का धातू को लगनेवाले प्रत्यय के कारण जो परिवर्तन होता है वह लिंग निर्धारण करता है । जब की हिंदी में लिंग व्यवस्था लिंग प्रत्यय नुसार होते है । जैसे मराठी लिंग व्यवस्था में एक हि शब्द के तीन अलग अलग रूप देखने को मिलते है। हिंदी भाषा में केवल दो ही लिंग है पुल्लिंग और नपुसकलिंग याने मराठी भाषा में जो शब्द नपुसकलिंग होंगे वह हिंदी में या तो पुल्लिंग होंगे या स्त्रिलिंग होंगे । अनुवाद करते समय अनुवादक को दोनों भाषाओं का तथा लिंग भेद का ज्ञान होना आवश्यक है जैसे -

	मराठी	हिंदी
1 -	रामाला चैन पडत नव्हती.	1 - राम को चैन नही था ।
2 -	पोस्टात जावून त्याने आपल्या मुलग्याला मुलाला तार केली.	2 - डाकघर में जाकर उसने अपने बेटे को तार भेज दिया ।
3 -	राम जवळ एक व्यक्ति उभी होती.	3 - राम के पास एक व्यक्ती खडा था।
4-	रामाने खिशातून एक नोट काढली.	4- रामने जेब से एक नोट निकाला ।

इस उदाहरण में चैन, तार , नोट , व्यक्ति , यह कुछ ऐसे शब्द है जिनका मराठी में स्त्रिलिंग के रूप में इस्तमाल होता है तो हिंदी में पुल्लिंग के रूप में कुछ ऐसे षब्द भी है जो मराठी में पुल्लिंग के रूप में इस्तमाल किए जाते है और हिंदी में स्त्रीलिंग के रूप में।

शब्द	लिंग (मराठी)	लिंग (हिंदी)
कमाल	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग
चक्कर	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग
झुंड	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग
थप्पड	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग
छाता	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग
हदय	नपुसकलिंग	पुल्लिंग
घर	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग
मृत्यु	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 7, June 2026 Impact Factor: 8.2

2.मराठी से हिंदी अनुवाद में कारक भेद - मराठी एवं हिंदी दानों भाषाओं में कारक को लेकर काफी भिन्नता दिखाई देती है। मराठी मे कारक को विभक्ति कहा जाता है मराठी में विभक्ति और कारक को अलग अलग माना गया है । मराठी में प्रचलित विभक्तियॉ प्रथमा से संबांधन तक आठ मानी गई है जिनकी संख्या हिंदी में भी आठ ही है । मराठी मे संबोधन को आठवी विभक्ति तो माना जाता है लेकिन अष्टमी न कहकर हिंदी विभक्ति की तरह ही संबोधन कहा गया है । जो केवल मराठी और हिंदी में संबोधन के लिए ही प्रयोग में लाया जाता है । हिंदी में संज्ञा को लगनेवाले विभक्ति प्रत्यय संज्ञा से अलग करके लिखे जाते है किंतु सर्वनाम के साथ जोडकर लिखे जाते है । जो मराठी में सर्वत्र जोडकर ही लिखे जाते है । जैसे रामाची टोपी का अनुवाद हिंदी में राम की टोपी होता है । मराठी से हिंदी में अनुवाद करते समय जिन कारको के कुछ प्रयोग विषिष्ट प्रकार के होते है । उन्हें उदाहरण स्वरूप यहॉ प्रस्तुत किया जा रहा है । हिंदी में कर्ता कारक का विभक्तिप्रत्यय ने है जो मराठी में भी है इसलिए सफल अनुवाद करने क लिए अनुवादक को सावधानी बरतनी जरूरी है

जैसे -

मराठी

हिंदी अनुवाद

1. शिवाजी सावंतांनी लिहिलेल्या मृत्यंजय कादंबरीस

1. शिवाजी सावंत जी के उपन्यास को ज्ञानपीठचा मूर्तीदेवी पुरस्कार मिळाला. ज्ञानपीठ का मुर्तिदेवी पुरस्कार प्राप्त हो गया ।

2. शिवराज ने वाचलेले पुस्तक मनोरंजक होते. 2. शिवराज की पढी पुस्तक मनोरंजक थी।

3. रवींद्रनाथ जादूच्या लेखनीने गोष्टी लिहायचे. 3.रवींद्रनाथ जादू की कलम से कहानियॉ लिखते थे।

4.वेदांत लहानपणी दगडाने आंबे पाडायचा. 4.वेदांत बचपन से पत्थर से आम गिराय करता था।

5.समोरच्या रस्त्याने गेल्यावर झाड दिसेल. ते पाहून त्याने घरी जायला हवे. 5.सामनेवाले रास्ते से जाने पर पेड दिखायी देगा उसे देखकर उसे घर जाना चाहिए।

हिंदी में सकर्मक भूतकाल में कर्ता को ने प्रत्यय लगता है किंतु इस नियम के अपवाद भी है मराठी से हिंदी अनुवाद करते समय यह ध्यान में रखना चाहिए उराहरणर्थ निम्न अनुच्छेद के अनुवाद में अपवादों का विचार करना पडेगा । जैसे कि --

मराठी - रामाने आंघोळ केली . लक्ष्मण खोकला . सीता शिंकली . मग रामाने पुस्तक आणले . लक्ष्मण पुस्तक विसरला .

हिंदी अनुवाद - राम ने नहाया । लक्ष्मण ने खॉसा । सीता ने छींका। फिर राम पुस्तक लाया। लक्ष्मण पुस्तक भूला ।

यहाँ नहाना , खॉसना , छींकना , अकर्मक क्रियाए है फिर भी भूतकाल में ने प्रत्यय लगता है लाना भूलना बोलना बकना सकर्मक क्रियाए है फिर भी भूतकाल में ने प्रत्यय नही लगता।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 7, June 2026 Impact Factor: 8.2

मराठी पाहिजे के लिए हिंदी में चाहिए शब्द का प्रयोग होता है किंतु इस क्रिया के कर्ता को मराठी में ने प्रत्यय लगता है तो हिंदी में को प्रत्यय की अपेक्षा होती है। जैसे -

मराठी - प्रत्येक तरूणाने आधी अभ्यास केला पाहिजे . प्रत्येक नागरिकाने कर्तव्यपालन केले पाहिजे.

हिंदी अनुवाद - प्रत्येक युवक को पहले पढाई करनी चाहिए । प्रत्येक नागरिक को कर्तव्यपालन करना चाहिए।

शरीर का दोष दिखाने के लिए मराठी भाषा में जहॉ ने प्रत्यय होता है वहॉ हिंदी में से प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है । जैसे कि -

मराठी - मी एका डोळ्याने आंधळा ,माझा भाउ कानांनी बहिरा आणि आमचा काका एका पायाने लंगडा।

हिंदी अनुवाद - मै एक ऑख से अंधा ,मेरा भाई कान से बहरा और हमारा चाचा एक पैर से लंगँडा।

मराठी ने प्रत्यय के लिए हिंदी मे पाय से प्रत्यय लगता है जो करण कारक का प्रत्य है किंतु से हिदी में अपादान कारक का भी प्रत्यय है अत मराठी के उन - हून के लिए भी हिंदी से प्रत्यय का ही प्रयोग होता है निम्नांकित मराठी अनुच्छेद क अनुवाद मं से प्रत्यय की ओर आप ध्यान दिजिए ।

मराठी - मी वाघाला घाबरतो तरीपण मी त्याला भेटलो. मी त्याला म्हणलो की मला तूला एक गोष्ट विचारायची आहे. वाघ स्वाभावाने दयाळु होता. माझ्याच्याने गप्प बसवेना मी म्हणालो मला तुझ्याकडे अभय मागायचे आहे . मी तुझा तिरस्कार करीत नाही.

हिंदी अनुवाद - मै शेर से डरता हूँ । फिर भी मै उससे मिला। मैने उससे कहा कि मुझे तुझसे एक बात पुछनी है । शेर स्वभाव से दयालु था। मुझसे चुप नही रहा गया । मैने कहा मै तुमसे अभय मॉगता हूँ मै तुमसे नफरत नही करता।

मराठी के हा, ही, हे सर्वनाम विषेषण के रूप में प्रयुक्त होते है। कई बार इनका अनुवाद हिंदी में करने की आवश्यकता नही होती। उदाहरणार्थ -

मराठी

1. लोकमान्य टिळक हे भारतीय असंतोषाचे जनक होते .
2. हा मुलगा कोण आहे.
3.मुलगा हा बापाचा आधार असतो.

हिंदी अनुवाद -

1.लोकमान्य तिलक भारतीय विद्रोह के जनक थे ।

2.यह लडका कौन हैं।

3.लडका बाप का सहारा होता है ।

मराठी ही अव्यय के लिए हिंदी भाषा में भी का प्रयोग किया जाता है और हिंदी ही मराठी के च के लिए प्रयोग किया जाता है जैसे -

मराठी -

1.राम जवळच बसला होता.

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 7, June 2026 Impact Factor: 8.2

2.त्यानेही चित्र काढले.

हिंदी अनुवाद -

1.राम पास ही बैठा हुआ था।

2.उसने भी चित्र निकाला।

कुछ अव्ययों को उनके पहले आनेवाले शब्द में की प्रत्यय की अपेक्षा होती है। कुछ क्रियाओं को भी इसी प्रकार की अपेक्षा होती है । निम्नांकित अनुच्छेद के अनुवाद से इन दोनों का मिलाजुला प्रयोग हुआ है । जैसे-

मराठी - मी घराकडे निघालो.तो शाळेकडे जाउ लागला.मला वाटलं शाळेपेक्षा घर बरे. घरी आईला मदत करणे हे माझे कर्तव्य आहे . भावाला सहाय्य करणे हा माझा धर्म आहे

हिंदी अनुवाद - मै घर की तरफ निकल पडा । वह पाठशाला की ओर जाने लगा । मैने सोचा, पाठशाला की अपेक्षा घर अच्छा । घर में मॉ की मदद करना मेरा कर्तव्य है । भाई की सहायता करना मेरा धर्म है ।

इसीप्रकार मराठी भाषी अनुवादक को हिंदी हस्व और दिर्घ कि और की का अंतर समझना होगा क्योंकि समुच्चयबोधक की मराठी में दीर्घ की है तो हिंदी में र्हस्व अर्थात कि उदाहरण -

मराठी - मी नागपूरचा प्रवास केला .

हिंदी अनुवाद - मैने नागपुर की यात्रा की ।

ऐसे ही हिदी की षष्ठी विभक्ति का की स्त्रीलिंग प्रत्यय भी है। जैसे -

मराठी - राधाची गाय. हिंदी अनुवाद - राधा की गाय ।

संबोधन के लिए मराठी में बहुवचन में नो हो जैसे प्रत्यय लगते है लेकिन हिंदी में संबोधन के सामान्य रूप को कोई प्रत्यय नही लगता उसके बहुवचन के रूप पर अनुस्वार नही होता । उदाहरणार्थ -

मराठी - ऐ मुला, अग मुली, ए मुलांनो , अग मुलींनों हे आया बहिणींनो, अरे माझ्या भावानों , सभ्य पुरूष हो माझे म्हणने ऐका.

हिंदी अनुवाद - ऐ लडके , अरी लडकी , अरी लडकियों , हे माँ- बहनों , अरें भाई , अरे भाईयों , देवियों और सज्जनों , मेरी बात सुनिए ।

3.मराठी से हिंदी अनुवाद में क्रिया भेद - मराठी की अपेक्षा हिंदी में संयुक्त क्रियाओं का प्रयोग अधिक मात्रा मे होता है । असें कजए पढना, देंना, जाना, पाना, बाना ,उठना , बैठना ,लेना सकना , बनना , चाहना , चूकना , आदि सहायक क्रियाओं का उपयोग किया जाता है । उदाहरणार्थ निम्नलिखित वाक्यों का अनुवाद देखिए जिससे एक मराठी क्रिया के लिए हिंदी में संयुक्त क्रिया का प्रयोग होता है । जैसे -

मराठी	हिंदी अनुवाद
1. मी झोपतो.	1. मै सोता हूँ।
2. तो गातो.	2.वह गाता है।
3.राम निघाला.	3.राम निकल पडा।
4.सीता म्हणाली मी पण येईन.	4.सीता ने कहा, मै भी जाउँगी।

4. मराठी से हिंदी अनुवाद में शब्दार्थ एवं अर्थ भेद -

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 7, June 2026 Impact Factor: 8.2

मराठी एवं हिंदी दोनो ही भाषाओं का उदभव संस्कृत से होने के कारण एवं लिपि भी एक सी होने के कारण दोनों ही भाषाओं में कुछ शब्द समानरूप से लिखे जाते है। मराठी से हिंदी अनुवाद करते समय समरूपीय शब्दों के अर्थगत भिन्नता की समस्या अनुवादक के सामने खडी होती है । अनुचित षब्द का चुनाव अनुवाद के पूरे अर्थ को ही बदल देता है । जैसे -

समान शब्द	हिंदी अर्थ	मराठी अर्थ
मेला	उत्सव	मरना
खाली	रिक्त	नीचे
ओले	बर्फ के छोटे टुकडे	गीला
चेष्टा	प्रयत्न	व्यंग्य या दिल्लगी
राजीनामा	सुलहनामा	त्यागपत्र
उपहार	भेंट	अल्पोपहार
शिक्षा	शिक्षण	सजा
जाडा	थंड के दिन	मोटा
संशोधन	सुधार करना	शोध करना

इसीप्रकार मराठी से हिंदी अनुवाद करते समय कुछ अन्य समस्याओं का भी अनुवादक को सामना करना पडता है। यथा - शब्दों की ध्वनि, शब्दों की वर्तनी , समानार्थी पर्यायवाची श ब्दों का चयन , मुहावरे , कहावतें जैसी विशिष्ट अभिव्यक्तियों की समानार्थी अभिव्यक्तियॉ ढूँढने की समस्या देष प्रदेष में प्रचलित रूढि रिवाजों , शिष्टाचार के लिए भाषा पारिभाषिक श ब्दों का अभाव तथा भाषा संबंधी त्रुटियों के कारण अर्थ निर्णय करके उचित समानार्थी शब्द के उपयोंग की कठिनाईयों का सफल अनुवाद करना साधारण कार्य नही है ।

संदर्भ ग्रंथ सूची -

1-प्रसिदध नाटककार मामा वरेरकर जी का वक्तव्य अंष

2-डॉ.भोलानाथ तिवारी - अनुवाद विज्ञान - पृ.16

3-डॉ.जी.पी. गोपीनाथन - अनुवाद सिदधांत एवं प्रयोग - पृ.16

4-संपा.डॉ.गार्गी गुप्त - अनुवाद बोध - पृ.6

5- डॉ.अर्जुन चव्हाण - अनुवाद समस्याए एवं समाधान -10

6- कै. मो. रा. वाळके - सुगम मराठी व्याकरण लेखन - पृ.क्र 30

7-यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट मुक्त विदयापीठ की पुस्तक नं .101 हिंदी भाषा का परिचय और उसकी संरचना - पृ.क्र - 32 -34